5

लैंगिक समानता की अवधारणा और महिला शिक्षक की भूमिका

चित्रा सिंह*

लैंगिक समानता की अवधारणा समाज में व्याप्त स्त्री-पुरुष के बीच मौजूद असमानता को दूर करने की एक रणनीति है। इसके द्वारा उन ऐतिहासिक और सामाजिक प्रतिरोधों को दूर करने का प्रयास किया जाता है जो कि स्त्री और पुरुष को समान होने से रोकते हैं। इनमें वे सकारात्मक क्रियाएँ भी शामिल हैं जो स्त्री के प्रति एक विशेष व्यवहार को इंगित करती हैं। लैंगिक समानता की रणनीति शिक्षक को ध्यान में रखते हुए तैयार करना दो कारणों से ज़रूरी है पहला यह एक अंतर्राष्ट्रीय उद्देश्य है और दूसरा शिक्षक इसमें केंद्रीय भूमिका रखते हैं। यूनेस्को ने अपने *ग्लोब्ल पोस्ट -2015* के एजुकेशन एजेंडा में इसे मुख्य स्थान दिया है। स्त्री शिक्षक इस मामले में ज़्यादा कारगर भूमिका निभा सकती हैं, वे इसे ज़्यादा अच्छी तरह महसूस कर सकती हैं कि लैंगिक असमानता ने किस तरह समाज और उसके विकास को प्रभावित किया है। क्योंकि स्त्री शिक्षक भी कभी न कभी इसका इसका शिकार रही ही होती हैं। प्रस्तुत आलेख में इस दिशा में स्त्री शिक्षक की भूमिका और प्रशिक्षण को ध्यान में रखते हुए कुछ मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली के पोज़ीशन पेपर *नेशनल फोकस ग्रुप ऑन जेण्डर इशूज़ इन ऐजूकेशन* में शिक्षक के लिए Pronoun 'Her' का प्रयोग किया गया है His का नहीं। इससे पता चलता है कि महिला शिक्षक की शिक्षा के क्षेत्र में लैंगिक असामानता दूर करने में कितनी महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है और है। आगे भी उसे इस दिशा में उत्प्रेरक ही नहीं, बल्कि सूचना के प्रसारण में मुख्य भूमिका अदा करने वाला बताया गया है। यह सिर्फ़ नीतिगत रूप से ही सही नहीं वरन् स्वाभाविक भी है, अंततः यह स्त्री ही है जो मानव की प्रथम शिक्षक होती है। ऐसा कहना उसकी भूमिका को सीमित करना नहीं है वरन् उसके नैसर्गिक गुणों का अधिकतम उपयोग करने की दिशा में एक प्रयास

* *सह-अध्यापक,* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

है। क्योंकि जो हम स्वाभाविक रूप से करते हैं उससे हम कहीं ज़्यादा आगे बढ़ सकते हैं। यदि हम लैंगिक समानता के लिए स्त्री शिक्षक की भूमिका को केंद्र में रखते हैं तो हम वे लक्ष्य आसानी से पा सकते हैं। विशेष रूप से वे लक्ष्य जो ऐतिहासिक और सामाजिक कारणों से ज़्यादा कठिन हैं।

भारतीय शिक्षा व्यवस्था के साथ सकारात्मक बात यह है कि स्त्री शिक्षक अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में उपलब्ध हैं, अन्य किसी क्षेत्र की तुलना में। दुनिया के विकसित देशों में भी ऐसा नही है, जबकि भारत में शिक्षा को स्त्री के लिए बेहद स्वाभाविक और सुविधापूर्ण व्यवसाय माना जाता है और उन्हें इसे अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया जाता है। यही नहीं शिक्षा संस्थानों के प्रमुख पदों जैसे प्राचार्य पद, विशेष रूप से विद्यालयी शिक्षा में, के लिए महिला को ज़्यादा उपयुक्त माना जाता और अधिकांश विद्यालयों के प्राचार्य पदों पर हम उन्हें नियुक्त देख सकते हैं। इसलिए ज़रूरी हो जाता है कि लैंगिक समानता की दिशा में उनकी भूमिका पर ज़ोर दिया जाए, ताकि इसके उद्देश्यों की पूर्ति आसानी से हो सके।

स्त्री शिक्षक का लड़कियों की शिक्षा पर प्रभाव

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली का पीछे बताया गया पर्चा स्त्री शिक्षक की भूमिका को लड़कियों के अधिकाधिक शिक्षा लेने से जोड़ता है। विद्यालयों में स्त्री शिक्षक होंगी, तो लड़कियाँ विद्यालयों में ज़्यादा प्रवेश लेंगी, ऐसा माना जाता है और यह सच भी है। लेकिन वह कहते हैं कि यही एक मात्र वजह नहीं होनी चाहिए। यदि स्त्री शिक्षक को केंद्रीय भूमिका निभाना है तो स्त्री शिक्षक के विद्यालयों में जीवन अनुभवों, शिक्षक प्रशिक्षण की प्रांसगिकता और सब तक पहुँच और इस व्यवसाय में उसके करियर के विकास पर भी ध्यान देना होगा। लैंगिक समानता के परिपेक्ष्य में उनकी भूमिका मज़बूत तब ही हो सकती है जब शिक्षण कार्य में उनका अनुभव सकारात्मक हो। यही समाज में उनके स्थायी प्रभाव को प्रेरित कर सकता है। लेकिन स्त्री शिक्षक को केवल लड़कियों की शिक्षा के संदर्भ में ही आगे नहीं किया जाना चाहिए, बल्कि लड़कों की शिक्षा में भी उनकी अहम भूमिका होनी चाहिए। लैंगिक समानता असल में तभी पायी जा सकेगी।

स्त्री शिक्षक छात्राओं की उत्प्रेरक के रूप में

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर लड़कियों के प्रवेश में स्त्री शिक्षक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं। समाज की जो हालत अभी तक भी है, उसमें परंपरागत रूप से लड़कियों की शिक्षा कन्या विद्यालय में स्त्री शिक्षक द्वारा दिये जाने को महत्व दिया जाता है। रूढ़िवादी समाज इसके लिए हमेशा तैयार रहता है। ऐसे में स्त्री शिक्षक छात्राओं के पक्ष में उनके परिपेक्ष्य में और उनकी ज़रूरतों तथा उनके अनुकूल वातावरण तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली के *जेण्डर इशूज़ इन ऐजूकेशन* पर्चे में छात्राओं की शिक्षा के संदर्भ में स्त्री शिक्षक की विभिन्न भूमिकाओं का भी उल्लेख है, उसमें बताया गया है कि –

- स्त्री शिक्षक छात्राओं के लिए आदर्श भी स्थापित कर सकती हैं।
- छात्राएँ बीच में विद्यालय न छोड़ें इसमें विद्यालय में स्त्री शिक्षक की उपस्थिति महत्वपूर्ण कारक हो सकती है।

इन व्यावहारिक कारणों के इतर स्त्री शिक्षक छात्राओं को एक सुरक्षित, तनाव रहित तथा खुला वातावरण प्रदान करने की मंशा में भी सहायक हो सकती है। छात्राएँ अपनी बात पुरुष शिक्षक के बनिस्बत स्त्री शिक्षक से आसानी से कह सकती हैं, उस पर सहज रूप से बात कर सकती हैं और अपना दृष्टिकोण भी बाँट सकती हैं जो पुरुष शिक्षक के साथ आसान नहीं होता। यही समस्या छात्रों की स्त्री शिक्षक को लेकर भी हो सकती है वे भी पुरुष शिक्षक के साथ आसानी से खुल कर अपनी बात कह सकते हैं। इस मनौवैज्ञानिक और व्यवहार संबंधी समस्या का समाधान भी खोजा जाना चाहिए। जहाँ एक ओर पुरुष शिक्षकों को छात्राओं के शिक्षण के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किये जाने की आवश्यकता है, वहीं दूसरी और स्त्री शिक्षक को भी छात्रों के लिए विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

एक और मुख्य बिंदु जो यह पेपर रखता है, वह है स्त्री शिक्षक का एक नीति निर्माता के रूप में योगदान। छात्राओं की स्थिति सुधारने और उनकी समस्याओं को हल करने में यह महत्वपूर्ण भूमिका रखता है। बस यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि स्त्री शिक्षकों की भूमिका केवल बैठकों और सामान्य गतिविधियों तक ही सीमित न रह जाए वरन् छात्राओं की प्रवक्ता की हैसियत से भी वे नीति निर्माण में दखल दें। दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु हर स्तर पर और हर विषय में स्त्री-पुरुष शिक्षक संतुलन पर ज़ोर देता है। स्त्री और पुरुष शिक्षकों के बीच विषयों का बँटवारा-सा कर दिया गया है। भाषा, कला और सामाजिक विज्ञान के विषय स्त्री शिक्षकों के स्वाभाविक विषय मान लिए गए हैं और पुरुष शिक्षकों के गणित तथा विज्ञान । यदि यह असंतुलन दूर कर दिया जाए और गणित तथा विज्ञान जैसे विषय भी स्त्री शिक्षकों द्वारा पढाए जाने लगे तो छात्राओं में भी इन विषयों के प्रति रुचि जाग्रत होगी। यह वे विषय हैं जो लड़कों के विषय माने जाते हैं। इस पद्धति में परिर्वतन किया जाना चाहिए स्त्री शिक्षक के लिए माने जाने वाले विषयों को पुरुष शिक्षकों द्वारा भी पढ़ाया जाना चाहिए।

यह दृष्टि लैंगिक समानता के विकास में महत्वपूर्ण हो सकती है किंतु इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिए की स्त्री के लिए स्वाभाविक क्या है? यदि कोई छात्रा स्त्री शिक्षक के लिए ही समझे जाने वाले विषयों में ही रुचि रखती है तो उसे इसके लिए भी पर्याप्त प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

स्त्री शिक्षक की समस्या लैंगिक समानता के परिपेक्ष्य में

इस बिंदु को हम न्यूयॉर्क की एक माध्यमिक शाला शिक्षिका के उदाहरण से बेहतर समझ सकते हैं। वह लिखती हैं –

"मैं वह दिन कभी नहीं भूल सकती जब शिक्षण के अपने प्रारंभिक दौर में एक दिन एक पुरुष शिक्षक गलती से मेरी कक्षा में चला आया, यहाँ तक तो सब नॉर्मल था, लेकिन इसकी जो प्रतिक्रिया छात्रों में हुई

वह विचलित कर देने वाली थी। लगातार बात करते रहने वाले आठवीं कक्षा के मेरे छात्र इससे एकदम सर्तक हो गए, सीधे बैठ गए और ध्यान से मुझे सुनने लगे। ये मेरे लिए आश्चर्यजनक था क्योंकि इन्हीं छात्रों का ध्यान खींचना मेरे लिए मुश्किल होता था, जबकि मैं अत्यंत सावधानी से अपना पाठ तैयार करती थी, कक्षा में उसे पढ़ाती और दोहराती भी थी और यह काफ़ी मुश्किल होता था। मैं स्तब्ध थी कि पुरुष शिक्षक की क्षणिक उपस्थिति मात्र वह प्रभाव पैदा कर रही थी जो मैं काफ़ी मेहनत के बाद भी पैदा नही कर पा रही थी।" (चैपम, 1994)

सभी स्त्री शिक्षक कभी न कभी इससे मिलती-जुलती परिस्थितियों से दो-चार होती ही हैं। विशेष रूप से छात्रों द्वारा उन्हें गंभीरता से नहीं लिया जाना इसका एक कारण होता है। इसके लिए हमारी सामाजिक संरचना ज़िम्मेदार है। सबसे पहले इसे बदलना होगा। लेकिन यह एक समय लेने वाली योजना है और काफ़ी लंबी लड़ाई है अतः शिक्षिका को ही इसके लिए तैयार करना सबसे ज़्यादा आवश्यक है।

उपरोक्त शिक्षिका ने इस स्थिति से निपटने के लिए क्या किया इस बारे में कुछ बातें वे हमारे सामने रखती हैं। ये स्त्री शिक्षक को लैंगिक समानता के लिए दिये जाने वाले प्रशिक्षण के प्रमुख बिंदु भी हो सकते हैं। वह लिखती हैं कि उन्होंने इस बारे में अपने गुरू की सलाह मानी और यह किया।

वे आगे लिखती हैं कि —

"सबसे पहले मैंने अपनी आवाज़ ऊँची की और स्वयं को छात्रों के समक्ष तने कंधों के साथ प्रस्तुत किया। यह एक सिद्ध बात है कि पुरुष हर क्षेत्र में अपना वर्चस्व चाहता है। कक्षाओं में भी यही दृष्टिकोण काम कर रहा होता है और शिक्षिका का उपरोक्त बर्ताव छात्रों को उन्हें गंभीरता से लेने के लिए प्रेरित कर सकता है।" (चैपम, 1994)

वे आगे लिखती हैं कि अपने अध्यापन के चौथे साल में जाकर उन्होंने कक्षा में अपनी उपस्थिति को मज़बूती से रख इस पारंपरिक अवधारणा को चुनौती देने के प्रयास शुरू किए जो यह तय करती है कि एक शिक्षक, विशेष रूप से एक शिक्षिका, को कैसा लगना और दिखना चाहिए। उन्होंने देखा कि अधिकांश छात्र अच्छे शिक्षण को अच्छे लेक्चर से जोड़ते हैं अतः उन्होंने छात्रों को बताया कि सबसे सफल कक्षा गतिविधि वह होती है जिसमें छात्र ही प्रश्न पूछते रहते हैं और अधिकांश समय अपनी बात रखते रहते हैं। सिर्फ़ अच्छा लेक्चर ही काफ़ी नहीं होता।

एक शिक्षिका के रूप में उनके द्वारा किया गया यह नवाचार तमाम शिक्षिकाओं के लिए उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। इस तरह का नवाचार अभी तक सिर्फ़ पुरुष आधिपत्य का क्षेत्र ही रहे हैं और एक शिक्षिका भी ऐसा कर सकती है यह सिर्फ़ चौंका देने वाला विषय ही रहा है और हो सकता है।

एक और नवाचार जो उन्होंने किया वह था समावेशी व सहयोगी प्रकृति को बढ़ावा देना, जो प्रायः स्त्रियों से संबंधित गुण माने जाते हैं। उन्होंने छात्रों को अन्य छात्रों के विचारों पर आपसी सहयोग से काम करने को प्रेरित किया ताकि उनमें उस पाठ के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित हो सके जो वे पढ़ रहे थे।

इसका उन्हें परिणाम भी मिला जब एक छात्र ने उन्हें बताया कि इससे उसकी संप्रेषण क्षमता काफ़ी बढ़ गयी थी और उसने कक्षा में पाठ पर चर्चा को अन्य छात्रों के लिए भी सहज और सुविधाजनक बनाना प्रारंभ कर दिया था जबकि पहले वह चर्चा में अपनी धाक जमाने की कोशिश करता था। उसने उन्हें लिखा –

"अब मुझे मेरे साथियों के साथ में काम करना अच्छा लगता है, मैं अनुभव करता था और करता हूँ कि नेतृत्व क्षमता में मैं हमेशा अव्वल रहा हूँ लेकिन आपकी कक्षा में चर्चाओं ने मुझे पीछे आराम से बैठ अपनी साथियों को बोलते व चर्चा करते देखना सिखाया।" (चैपम, 1994)

हम देख सकते हैं छात्र का इस तरह पिछली सीट पर बैठना नकारात्मक नहीं एक सकारात्मक परिवर्तन था। एक शिक्षिका ही ऐसा परिवर्तन ला सकती है क्योंकि वो नैसर्गिक रूप से चीज़ों और परिस्थितियों को सुविधाजनक बनाती रही है। यह स्त्री ही है जो आधिपत्य नहीं सहयोग में विश्वास करती रही है और तर्क नही भावनाओं को महत्वपूर्ण मानती रही है।

स्त्री के इन्हीं गुणों को जो आधुनिक समय में उसकी कमज़ोरी की तरह प्रस्तुत किये जाते रहे हैं एक शिक्षिका द्वारा शिक्षण के प्रमुख औज़ारों की तरह विकसित किये जाने चाहिए जैसा उपरोक्त शिक्षिका ने किया।

लैंगिक समानता के लिए शिक्षक-शिक्षिका का प्रशिक्षण — एक तुलना

लैंगिक समानता के लिए जब शिक्षकों के प्रशिक्षण की बात की जाती है तो प्रायः यह पुरुष शिक्षक के प्रशिक्षण पर ही केंद्रित हो जाती है शिक्षिका प्रायः भुला दी जाती हैं। पूरी दुनिया में लैंगिक असमानता, जो विद्यालय स्तर पर विद्यमान है, को लेकर जो भी शोध और अध्ययन किए गए हैं वे प्रायः शिक्षकों और छात्रों के संबंधों पर हैं शिक्षिकाओं और छात्राओं के संबंधों पर न के बराबर हैं। इनमें सिर्फ़ शिक्षक द्वारा कक्षा में छात्राओं की तुलना में छात्रों के प्रति पक्षपातपूर्ण व्यवहार को आधार बनाया गया है और उसमें लैंगिक असमानता को प्रश्नांकित किया गया है। शिक्षिकाओं के बारे में यदि अध्ययन व शोध हैं भी तो उनमें शिक्षा के क्षेत्र में उनके प्रतिशत पर ज़्यादा ज़ोर दिया गया है या यह बताया गया है कि स्त्रियों को केवल शिक्षिका के रूप में ही स्वीकारा गया है तथा इस क्षेत्र में भी प्रशासकीय व प्रबंधक पदों पर उनका अनुपात काफ़ी कम है। लैंगिक समानता के प्रति शिक्षिकाओं के व्यवहार व दृष्टिकोण का अध्ययन व इस पर किये गये शोध न के बराबर हैं।

इस अभाव के कारण जहाँ लैंगिक समानता पर शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाना संभव व आसान हो जाता है वहीं शिक्षिकाओं का प्रशिक्षण इतना आसान और संभव नहीं हो पाता। बल्कि इस ओर ध्यान भी नहीं जाता। शिक्षक एक व्यक्ति है ये बात सही है। लेकिन पहले वह एक पुरुष या स्त्री भी है इस बात को ध्यान में रखा जाए तो इस दिशा में सही सफलता प्राप्त की जा सकती है क्योंकि लैंगिक समानता के पक्षधर भी यह बात कहते हैं कि विद्यालय में छात्रों को सिर्फ़ यह ही नहीं सिखाया जाना चाहिए कि महिला और पुरुष अलग नहीं है वरन् ये भी बताया जाना चाहिए

कि वे अलग ज़रूर हैं, लेकिन बराबर हैं। यही सीख वास्तविक लैंगिक समानता को प्राप्त करा सकती है।

अब हम देखें कि किस तरह शिक्षकों पर लैंगिक समानता को लेकर अध्ययन किए गए हैं। कहा जाता है कि –

- कुछ शिक्षक छात्राओं को कम अर्थपूर्ण व सघन प्रशंसा देते हैं जबकि लड़कों का काम हमेशा उत्कृष्ट बताया जाता है।
- छात्रों की तुलना में छात्राओं के काम को कमतर आँका जाता है।
- छात्रों पर छात्राओं की तुलना में ज़्यादा ध्यान देते हैं।
- छात्रों से पूछे गए प्रश्नों के उत्तर के लिए छात्राओं की तुलना में देर तक इंतजार करते हैं।
- छात्रों से आँख मिलाकर बात करते हैं छात्राओं से नहीं।
- छात्रों के नाम ज़्यादा याद रखते हैं।
- छात्रों को उनके नामों से बुलाते हैं।
- कक्षा में पाठ-चर्चा के दौरान केवल छात्रों के कमेंट्स का ही उल्लेख करते हैं।
- छात्राओं को उनकी बात पूरी होने से पहले ही रोक देते हैं।
- केवल छात्रों से ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो उच्च दर्जे की विचार क्षमता की माँग करते हैं केवल तथ्यों को पेश करने पर आधारित नहीं होते।

इस तरह कक्षा में जब शिक्षकों के व्यवहार को रेखांकित कर लिया जाता है तो उनके प्रशिक्षण के बिंदुओं पर विचार कर लैंगिक समानता के लिए उन्हें तैयार करने में भी आसानी हो जाती है। शिक्षिकाओं पर ऐसे अध्ययन कम ही हैं अतः उनके प्रशिक्षण पर इस दिशा में काम नहीं हो पाता।

इसी आधार पर शिक्षकों को लैंगिक समानता के लिए उन बिंदुओं पर प्रशिक्षण दिया जाता है जिससे वे लिंग भेद आधारित अपने व्यवहार को समझ सकें और पाठ्यक्रम में मौजूद लैंगिक भेदभाव का प्रतिकार कर सकें। जैसे वे पाठ जिनमें लड़कों को या पुरुषों को उत्साहपूर्ण, बहादुर, आविष्कारी प्रवृत्ति का और ताकतवर बताया जाता है। जबकि लड़कियों को शांत, निष्क्रिय और अदृश्य-सा बताया जाता है। शिक्षक को अपनी स्वयं की और पाठ्यक्रम की इस प्रवृत्ति पर काम करना चाहिए। इस तरह शिक्षक पाठ्यक्रम में मौजूद लिंग भेद को पहचान सकेंगे।

इसी तरह उन्हें यह भी बताया जाता है कि किस तरह पुरुष शिक्षक छात्रों के लिए आदर्श बन सकते हैं। वे छात्रों को यह बता सकते हैं कि उन्हें सीखने के बारे में कितना उत्साहपूर्ण होना चाहिए, सीखने का महत्व जानना चाहिए और कई तरह से अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें यह भी बताया जाता है कि छात्र हमेशा अपनी जगह तलाशना चाहते हैं। उन्हें ऐसे शिक्षक पसंद होते हैं जो कठोर तो हों पर नैतिक व्यवहार करते हों, छात्र चाहते हैं कि शिक्षक उन्हें ज़्यादा दबाव में नहीं रखें। उन्हें यह भी बताया जाता है कि जब छात्र कक्षा में सुरक्षित महसूस करते हैं तो वे चुनौतियों से सकारात्मक ढंग से निपट सकते हैं। उदाहरण के लिए, छात्रों से कहना कि – क्या तुम यह कर सकते हो?, क्या तुम इसके लिए तैयार हो? यह उन्हें चुनौती लेने को प्रेरित करता है। छात्र उन लक्ष्यों के प्रति अधिक केंद्रित होते हैं जो छोटे, मापन योग्य, प्राप्त करने योग्य, यथार्थपूर्ण और समयबद्ध होते हैं। छात्र उन भौतिक और शैक्षिक गतिविधियों का

भी आनंद लेते हैं जो सक्रिय योगदान और शारीरिक क्रियाओं पर आधारित होती हैं।। छात्र देर तक शांत नहीं बैठे रह सकते इसके लिए उन्हें काफ़ी प्रेरणा की आवश्यकता होती है। अतः शिक्षक को कम से कम बोलकर उन्हे इसके लिए प्रेरित करना चाहिए।

छात्र मनोविज्ञान पर इतनी जानकारी देने के साथ ही शिक्षकों को यह भी बताया जाता है कि छात्र करते पहले हैं और सोचते बाद में हैं जबकि छात्राएँ पहले सोचती हैं फिर काम करती हैं। यह छुपे पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum) की अवधारणा पर आधारित है। जिसमें बताया गया है कि शिक्षक छात्रों को इस तरह पढ़ाते और शिक्षा देते हैं कि यह न केवल जातीय और सामाजिक वर्ग की धारणा को मज़बूत करता है वरन् लैंगिक संबंधों को भी मज़बूत करता है। शिक्षक का केवल छात्रों पर ध्यान देना और उन्हें ही अपनी बात रखने को प्रेरित करना छात्रों पर यह असर करता है कि वे ज़्यादा सामाजिक हो जाते हैं पर छात्राएँ इससे प्रायः शांत हो जाती हैं और वे यह समझने लगती हैं कि वे अपने साथ के छात्रों से अलग और कमतर हैं। शिक्षक को शिक्षण में ऐसा न हो इस बात का भी ध्यान रखने को कहा जाना चाहिए।

शिक्षिका के प्राकृतिक स्त्री गुणों का लैंगिक समानता में प्रयोग

आई.ए.ई.ई.ए. (International Association for Evaluation of Educational Achievement) द्वारा 14 देशों में किए गए अध्ययन में पाया गया है कि लैंगिक अवधारणा प्रदर्शन को बहुत प्रभावित करती हैं। अतः यह ज़रूरी हो जाता है कि इस कमज़ोरी को ही एक अस्त्र के रूप में काम में लिया जाए।

इस दिशा में किए गए कई अध्ययनों में स्त्री-पुरुष के मध्य नैसर्गिक रूप से विद्यमान विभिन्नताओं को ध्यान में लाना ज़रूरी है। जैसे कि सबसे बड़ा फ़र्क स्त्री-पुरुष के मस्तिष्क की संरचना में ही है। स्त्रियों के मस्तिष्क का बायाँ भाग ज़्यादा लाभकारी होता है जो पढ़ने-लिखने और बोलने में ज़्यादा कारगर है, जबकि उनका दायाँ भाग उन्हें सहानुभूति पूर्वक व अच्छी तरह से स्वयं की और दूसरों की भावनाओं को समझने में सहायता करता है। इस तरह उनके मस्तिष्क के दोनों भाग आवश्यक शैक्षिक गतिविधियों में सहायता करते हैं।

यह प्राकृतिक तथ्य स्त्री को शिक्षक के रूप में आदर्श प्रत्याशी बनाता है। वे इस व्यवसाय के लिए पुरुषों की तुलना में ज़्यादा अनुकूल साबित होती हैं। शिक्षिकाओं द्वारा लड़कियों पर ज़्यादा ध्यान देना क्योंकि वे शांत और लड़कों की तुलना में कम सक्रिय वाली होती हैं, इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि वे छात्राओं को कक्षा में ज़्यादा सक्रिय और सहभागी बनने के लिए प्रेरित कर सकती हैं।

लेकिन दिक्कत यह है कि शिक्षकों को जो प्रशिक्षण दिया जाता है वह इस तरह बनाया गया होता है कि इसमें शिक्षक-शिक्षिका की लैंगिक असामनता का कोई ध्यान नहीं रखा जाता। स्त्री के अनुभव, अपेक्षाओं, दृष्टिकोण, प्राथमिकताओं का इसमें ध्यान नहीं रखा जाता। यह 'विकास में महिलाएँ' (Women in Development) की अवधारणा पर आधारित है, जबकि उसे 'लिंग और विकास' (Gender in Development) की अवधारणा पर आधारित होना

चाहिए। जिसमें प्रशिक्षण कार्यक्रम नैसर्गिक लैंगिक असमानता को ध्यान में रखता है, स्त्री और पुरुष की अलग-अलग आवश्यकताओं को ध्यान में रखता है और लैंगिक असमानता को खुले तौर पर संबोधित करता है।

अतः शिक्षा के क्षेत्र में स्त्री केंद्रित व्यवसायिक विकास की ये रणनीतियाँ तय की जानी चाहिए।

1. यह तय किया जाना चाहिए कि शिक्षण में विकास के सभी अवसर उन्हें समान रूप से उपलब्ध हों और उन्हें उनके बच्चों की देखभाल करने के लिए सुविधाएँ, आवागमन के साधन और प्रशिक्षण के लिए स्त्री प्रशिक्षक उपलब्ध हों।
2. प्रशिक्षण की सारी सामग्री शिक्षिकाओं की प्राथमिकताओं और मुद्दों से संबंधित होनी चाहिए, जैसाकि राजस्थान के 'महिला प्रशिक्षण केंद्र' द्वारा किया जाता है।
3. शिक्षिकाओं का स्थानीय संगठन तैयार किया जाना चाहिए – इन संगठनों में शिक्षिकाएँ नियमित रूप से मिलती रह सकती हैं और एक-दूसरे की मदद कर सकती हैं। राजस्थान के *लोकजुम्बिश* कार्यक्रम के तहत "अध्यापिका मंच" इसका सबसे अच्छा उदाहरण हैं। इससे उन्हें अपने अलगाव से सामंजस्य बिठाने, एक साथ आने और व्यावसायिक विकास के अवसर उपलब्ध होते हैं।
4. नई शिक्षिकाओं के निरंतर प्रशिक्षण के लिए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र की किसी बड़ी महिला हस्ती को आदर्श बनाने के लिए प्रेरित किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने विद्यालयों में सहयोग और विकास कर सकें।
5. शिक्षा संबंधी नीति निर्धारण में शिक्षिकाओं की भूमिका सुनिश्चित की जानी चाहिए, ताकि वे सारी प्रशासनिक गतिविधियों में भी भागीदार हों।
6. विद्यालय शिक्षा के सभी स्तरों पर जैसे– प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर पर लैंगिक संतुलन पर ध्यान देना चाहिए तथा सभी विषयों में भी यह संतुलन हों इसका पालन किया जाना चाहिए।

इस प्रकार शिक्षिकाओं का इस क्षेत्र में योगदान रेखांकित करते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में सकारात्मक योगदान देने के लिए प्रेरित किया जा सकता है।

उपसंहार

लैंगिक समानता का अर्थ यह नहीं होना चाहिए कि स्त्री और पुरुष एक समान हो जाएँ बल्कि यह होना चाहिए कि विकास के अवसर उनके स्त्री या पुरुष होने पर आधारित न हों। शिक्षा इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। इसके लिए शिक्षिकाओं को अपनी प्राकृतिक और नैसर्गिक क्षमताओं का बेहतर उपयोग करने पर ज़ोर देना होगा। उन्हें यह देखना होगा कि पुरुष शिक्षक उनका प्रतिद्वंदी या आदर्श न हो। बल्कि एक स्वस्थ प्रतिस्पर्धा उनके बीच हो। वे उनके पुरुष होने पर ज़ोर न देकर अपने स्त्री होने के गर्व को महसूस करें। ऐसा करके वे न केवल छात्राओं के लिए एक आदर्श स्थापित करेंगी बल्कि छात्रों को भी अपनी सहपाठी छात्राओं के प्रति संवेदनशील और स्वस्थ प्रतिस्पर्धी बनने के लिए प्रेरित कर सकेंगी। वे एक वास्तविक शिक्षक होंगी जो कि सिर्फ़ शिक्षित ही नहीं करता वरन् प्रेरित भी करता है। नीति निर्माताओं को भी इस ओर प्रयास करना होगा।

संदर्भ

एन.सी.ई.आर.टी. 2006. 'जेंडर इशूज़ इन एजुकेशन'. *नेशनल फोकस ग्रुप – पोज़िशन पेपर*. नयी दिल्ली.

चैपम, एमान्डा. 1994. *जेंडर बायस इन एजुकेशन*. डी' यूविल कॉलेज, कनाडा.

यू.एन., क्रोनिकल. 2014. *एजुकेशन इज़ दि पैथवे टूवर्ड्स जेंडर इक्वलिटी*. दि मैगज़ीन ऑफ़ दि यूनाइटेड नेशन्स. यूएन.

यूनेस्को. 2012. *एक गाइड फ़ॉर जेंडर एक्वलिटी इन टीचर एजुकेशन*. यूनेस्को, दिल्ली.

रामचन्द्रन, विमला. 2015. *जेंडर इशूज़ फ्रेमिंग दि टीचर फोर्स*. एनयूईडीए, नयी दिल्ली.